

डॉ. जोनाथन ग्रीर, पुरातत्व और पुराना नियम, सत्र 5, सांस्कृतिक संदर्भ

© 2024 जोनाथन ग्रीर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जोनाथन ग्रीर और पुराने नियम में पुरातत्व पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, सांस्कृतिक संदर्भ।

फिर से हैलो। हम यहां अपने अंतिम व्याख्यान के साथ हैं और हम सांस्कृतिक संदर्भ के बारे में बात करने जा रहे हैं। इसलिए, हम सामाजिक संरचना, खान-पान और धर्म पर भी थोड़ा गौर करेंगे, और बस सतह को खंगालेंगे, जैसा कि इनमें से प्रत्येक व्याख्यान के मामले में हुआ है, उम्मीद है कि भविष्य के अध्ययन के लिए आपकी रुचि बढ़ेगी। लेकिन जब हम प्राचीन इजराइल की संरचना के बारे में सोचते हैं, तो एक सामान्य मॉडल पैतृक घराने का होता है, जिसे लैरी स्टीगर, डेविड स्लोअन, डैन मास्टर और कई अन्य लोगों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया है, जो बाइबल में दिए गए विवरणों को देखता है और उन्हें सहसंबंधित करता है। समाज के कुछ पैटर्न जिन्हें हम पारंपरिक समाजों में जानते हैं और पुरातत्व के साथ घनिष्ठ संबंध भी रखते हैं, जो कि सबसे छोटी इकाई में पिता का घर, यह बंधा हुआ घर देखता है जहां हमारे पास एक केंद्रीय पुरुष व्यक्ति और उसके बच्चे और फिर विस्तारित परिवार हैं।

इसकी कुछ झलक हमें प्राचीन इजराइल की वास्तुकला, उत्खननों में भी देखने को मिलती है। अगला स्तर कबीले का होगा, और फिर जनजाति तक। और फिर, अंततः, काल के शीर्ष पर देवता होंगे।

तो, प्राचीन इजराइल के लिए, यह यहोवा है। और आप देख सकते हैं, यहां तक कि जिस तरह से इसे यहां एक स्लैश मार्क के साथ दर्शाया गया है, देवता और राजा दोनों अनिश्चित रूप से एक ही स्थान पर हैं। और इससे थोड़ा पता चलता है कि राजशाही के दौरान, अगर अभी भी, जैसा कि कई लोग सुझाव देंगे, राजशाही को इस पैतृक घरेलू मॉडल में फिट करने की कोशिश की जा रही है, तो फिर देवता और राजा का रिश्ता क्या हो जाता है? विशेष रूप से छवि-धारण की हमारी पिछली चर्चा पर वापस जाने के लिए, यदि सभी मनुष्य सह-छवि वाहक हैं, तो यह राजा कहाँ है? वह घर की सामाजिक संरचना और परमात्मा के बीच कैसे स्थित होता है? इसलिए, हम इस तनाव को धर्मग्रंथों में खेलते हुए देखते हैं।

यदि हम एक प्राचीन इस्राएली के दैनिक जीवन के बारे में सोचें, तो उनका दैनिक जीवन कैसा रहा होगा? यह बहुत हद तक निर्वाह जीवन होता, जहां आपका अधिकांश दिन इस विचार और कार्य में व्यतीत होता कि आप क्या खाएंगे, भोजन इकट्ठा करना, भोजन की तैयारी करना और बिना भोजन के समय की तैयारी करना। आपकी पहली चिंता पानी होगी। और आप वर्षा जल को हौदों में एकत्र कर सकते हैं।

यहां हेलेनिस्टिक काल के बाद के तालाब की एक तस्वीर है जो मैंने एक तूफान के तुरंत बाद ली थी, और आप देख सकते हैं कि पानी कितना हरा है। हम चेतावनियों को याद कर सकते हैं,

विशेष रूप से यिर्मयाह में, एक झरने से कुंड के पानी की ओर बहने वाले जीवित जल की तुलना और अंतर, जो साल भर में स्थिर हो जाता था, और यिर्मयाह ने इज़राइल के कई पापों को याद करते हुए, कुंड के पानी के लिए जीवित जल को त्याग दिया था। और यह बड़े हौज का पानी भी नहीं था क्योंकि इसका प्लास्टर टूट गया था और यह रिस रहा था।

तो, आप इनमें से कुछ रोजमर्रा की छवियां देखते हैं जो धर्मग्रंथ के रूपकों और भाषा में आती हैं। लेकिन पानी, पानी, पानी. यह ऐसी चीज़ है जिसकी हम वास्तव में हमारे आधुनिक संदर्भों में सराहना नहीं कर सकते हैं यदि हमारे पास नल चालू करने और पानी निकलने की सुविधा है।

लेकिन पानी को हौदों से या झरने से या नदियों से या कुओं से इकट्ठा करना पड़ता था, और यह बहुत व्यापक होता। हमारे पास जल प्रवाह के मौसमी क्षेत्र वाडियाँ भी हैं जो वर्ष के अधिकांश समय शुष्क रहते हैं और फिर बरसात के मौसम में अचानक बाढ़ के साथ आते हैं, जो आज भी बहुत खतरनाक है। और हम परिदृश्य के सर्वेक्षण और बस्तियों और सभ्यताओं के साथ समन्वय के माध्यम से जल स्रोतों के बारे में पुरातात्विक रूप से जान सकते हैं।

जो उपज उगाई गई होगी उसमें अंगूर और खजूर, गेहूं और जौ, अनार, अंजीर और शहद शामिल होंगे, यह सोचा जाता था, रब्बियों की टिप्पणी से आगे बढ़ते हुए, कि जब भूमि को दूध की भूमि के रूप में कहा जाता है और शहद, यह खजूर शहद की बात कर रहा था। खैर, अब, तेल रेहोव में औद्योगिक स्तर के मधुमक्खी पालन गृह और मधुमक्खी के छत्ते की खोज के साथ, हम सुझाव दे सकते हैं कि शायद यह मधुमक्खियों का शहद भी है। शायद यह दोनों हैं, लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से शहद का सेवन किया।

अधिकांश गैर-पशु पौधे, फल और सब्जियाँ जो वे खाते थे, सूक्ष्म पुरातत्व के अध्ययन के माध्यम से पुरातात्विक रूप से हमारे लिए सुलभ हैं, उन अवशेषों को देखकर जिन्हें हम नग्न आंखों से नहीं देख सकते हैं, लेकिन फिर उन्हें खोजा जा सकता है या पता लगाया जा सकता है सूक्ष्मदर्शी. पशुधन, भेड़, बकरी, मवेशी, और शिकार भी। शिकार किसी भी प्राचीन समाज का एक हिस्सा था, और शिकार और घरेलू पशुधन के बीच स्पष्ट विभाजन भी धुंधला हो सकता था, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है।

लेकिन हम जानवरों की हड्डियों के रिकॉर्ड में मुख्य रूप से भेड़, बकरियों और मवेशियों का प्रतिनिधित्व पाते हैं। वे तीन मुख्य जानवरों की हड्डियाँ हैं जो हम पाते हैं। वहाँ जंगली जानवरों की संख्या कम है, विशेष रूप से चिकारे और हिरण, लेकिन जैसा कि हमने बात की है, हमारे पास सूअरों के कुछ सीमित साक्ष्य भी हैं, और प्राचीन दुनिया के वाहनों से जानवरों की हड्डियाँ भी हैं।

इसलिए, अधिकांश यात्रा पैदल ही की जाती थी, लेकिन जब आपके पास कोई वाहन या पोर्टेबल ट्रंक होता है, तो अधिक संभावना होती है कि इस संदर्भ में गधा पसंदीदा सामान वाहक था, और जब हम वहाँ पहुंचे तो लंबी दूरी के व्यापार के लिए अक्सर ऊंटों का उपयोग किया जाता था। पहली सहस्राब्दी की अवधि. तो यहाँ पुरातात्विक स्थलों से जानवरों की हड्डियों के विश्लेषण को देखते हुए चिड़ियाघर पुरातत्व हमारी मदद करता है। आहार का प्राथमिक घटक रोटी रहा होगा, गेहूं और जौ से बनी रोटी, और हम पुरातत्व, नृवंशविज्ञान अनुसंधान और बाइबिल में भी अनाज

से रोटी बनने की प्रक्रिया, रोपण, कटाई, थ्रेसिंग, विनोडिंग के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।, छानना, और प्रसंस्करण।

हमने लोहे के उपकरण खोजे हैं जो हल की नोक होंगे, जो या तो मानव या पशु संचालित होंगे जो जमीन को तोड़ देंगे। फिर उन्होंने वह बीज बोया होगा जो पिछली फसल से बचाया गया होगा, और फिर, जैसे-जैसे खेत बड़े हुए, हमारे पास दरांती के कुछ पुरातात्विक अवशेष भी हैं जो लकड़ी के बने होंगे और उनमें चकमक ब्लेड लगाए गए होंगे। कभी-कभी हड्डी का भी प्रयोग किया जाता था।

और फिर यह अनाज, या डंठल इकट्ठा किया गया होगा, और थ्रेसिंग स्लेज द्वारा चलाया गया होगा। तो आपके पास एक तुलनात्मक रूप से आधुनिक तस्वीर है कि एक थ्रेसिंग स्लेज कैसा दिखता था, जहां स्लेज के नीचे चट्टान या धातु के टुकड़े, अन्य कठोर सामग्री होती थी जिन्हें फिर डंठल से खींचकर सिर को अलग किया जाता था। भूसा। और फिर अगला चरण होगा वंटना और छानना।

और यहाँ हमें हवादार स्थानों में खुले आधार के स्लैब मिलते हैं, जहाँ पिचफ़र्क-प्रकार के उपकरणों के साथ, बीज और डंठल का मेश फेंका जाता था और फिर भूसी उड़ा दी जाती थी, जहाँ भूसी उड़ जाती थी, और अनाज फिर फर्श पर गिर जाता था जहाँ यह होता था फिर ग्राइंडस्टोन के साथ संसाधित करने के लिए इकट्ठा किया जाएगा। पुरातात्विक खुदाई में हमें कई ग्राइंडस्टोन मिलते हैं। नीचे के लिए काठी का पत्थर और शीर्ष पर चक्की का पत्थर, और आप देखते हैं कि यह अनाज को आटा में पीसने की प्रक्रिया का एक मिस्र का उदाहरण है।

फिर मानव सभ्यता में बहुत पहले ही, यह महसूस किया गया कि यदि आप थोड़े से आटे को थोड़ी देर के लिए पानी के साथ छोड़ दें, तो यह हवा के खमीर का उपयोग करके इस प्राकृतिक प्रक्रिया में किण्वित होना शुरू हो जाएगा, और तथाकथित खट्टी रोटी बस यही है रोटी खमीर के आधुनिक आविष्कार तक है। और फिर, जैसे ही इसे एक साथ मिलाया जाता है, आटे और पानी को ऊपर उठने दिया जाता है और फिर उनके पास मौजूद ओवन या टैबून में पकाया जाता है। तो, यह रोटी बनाने की प्रक्रिया है जो अभी भी कई पारंपरिक समाजों में प्रचलित है।

और फिर, आप पूरे धर्मग्रंथ में रोटी पकाने के रूपक देखते हैं। मेरे पसंदीदा उदाहरणों में से एक अमोस की पुस्तक से है, जिसमें प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रक्रिया है, ठीक है, इसमें कई कटाई भी हैं, लेकिन रोटी बनाने में प्रत्येक चरण, गर्म ओवन की बात करना इत्यादि इत्यादि। लेकिन हम इस प्रकार के रूपकों को देखते हैं जो प्राचीन इज़राइल की वास्तविक दुनिया में निहित हैं जो बाइबिल की पूरी कहानी में प्रयुक्त होते हैं।

जैतून एक और बहुत महत्वपूर्ण फसल थी, और आप कुछ वीडियो फुटेज देख सकते हैं जो मैंने अपेक्षाकृत हाल ही में लिए थे कि कैसे एक लंबी छड़ी का उपयोग करके और एक पेड़ को पीटकर, गिरे हुए जैतून को इकट्ठा करने के लिए एक कवर या कंबल बिछाकर इसकी कटाई की गई थी। इसका उपयोग कॉस्मेटिक प्रयोजनों के लिए सूखी त्वचा को चिकनाई देने के लिए किया

जाता था, लेकिन जैतून के लैप के लिए ईंधन के लिए भी किया जाता था जो उनकी शाम को रोशन करते थे। तेल उत्पादन के तरीके कुछ और हैं जिन्हें हम पुरातात्विक रूप से पहचान सकते हैं।

हमारे पास वाइन बनाने की प्रक्रिया के भी साक्ष्य हैं, लेकिन पुरातात्विक रूप से सबसे प्रमुख उदाहरण जैतून को दबाने की प्रक्रिया के हैं, जहां जैतून को इकट्ठा किया गया होगा और बेसिन में रखा गया होगा, जिस पर पीसने के पत्थर को घुमाकर मैश बनाया गया होगा। जैतून जिनमें गुठलियाँ और गूदा, बीज शामिल होंगे। और फिर इस मैश को इकट्ठा करके टोकरियों में रखा जाता और एक दबाने वाले पत्थर पर रख दिया जाता। और आप वहां उसमें फंसी नाली देख सकते हैं।

और फिर प्रेस के दूसरे छोर पर लगे बीम पर वजन लगाया गया होगा जिससे टोकरियाँ दब गई होंगी। और इसलिए, विभिन्न दबावों से तेल निचोड़ लिया जाएगा जो नाली के नीचे बह जाएगा और एक सिरेमिक बर्तन में एकत्र हो जाएगा। इसलिए, हमें पूरे देश में इन वाइन प्रेसों के पुरातात्विक साक्ष्य और समय-समय पर कुछ शैलीगत परिवर्तन मिलते हैं, लेकिन हमें प्राचीन इज़राइल में इसके कई प्रमाण मिलते हैं।

अन्य प्रौद्योगिकियां जो रोजमर्रा की जिंदगी के लिए महत्वपूर्ण रही होंगी उनमें मिट्टी के बर्तन शामिल हैं, जहां वे मिट्टी लेते थे, पकाने से पहले बर्तन के कपड़े में विभिन्न प्रकार के मिश्रण मिलाते थे, और किस प्रकार के तापमान के आधार पर मिट्टी को कुछ खास तरीकों से तड़का लगाते थे। पॉट उजागर हो जाएगा। इसलिए, उदाहरण के लिए, खाना पकाने के बर्तनों के लिए, वे अक्सर यह सुनिश्चित करने के लिए एक तड़का शामिल करते हैं कि खाना पकाने का बर्तन सीधे आग पर रखे जाने का सामना कर सके। और इसलिए, वे अपने खाना पकाने के लिए, अपने भंडारण के लिए, और अपने खाने के लिए, उपभोग के लिए मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करेंगे।

कपड़ा भी. हमारे पास कपड़ा उत्पादन के पुरातात्विक साक्ष्य हैं। मिट्टी के बर्तनों के विपरीत, पुरातात्विक रिकॉर्ड में क्या बचा है, हमें एकत्र की गई प्रत्येक बाल्टी में मिट्टी के बर्तनों के टूटे हुए टुकड़े मिलते हैं, लेकिन वस्त्रों के साथ, पिछली पीढ़ियों में, एकमात्र अवशेष करघे के वजन रहे होंगे जो ऊर्ध्वाधर धागों को लटकाते रहे होंगे करघे का भाग.

अब हम सूक्ष्म पुरातत्व के माध्यम से उन वस्त्रों के साक्ष्य देख सकते हैं जो नग्न आंखों से लुप्त हो गए हैं, और कुछ दुर्लभ मामलों में, हमारे पास ऐसे वस्त्र हैं जो जॉर्डन घाटी और नेगेव की बहुत शुष्क परिस्थितियों में संरक्षित हैं। हमारे पास टैनिंग और चमड़े के कुछ साक्ष्य भी हैं जिनका उपयोग कपड़ों में और फिर बाद के समय में चर्मपत्र के लिए भी किया जाता था। निर्माण कार्य लकड़ी एवं पत्थर से होता होगा।

वास्तव में, लकड़ी से अधिक पत्थर। लकड़ी दुर्लभ थी, इसलिए अधिकांश दीवारें और संरचनाएं पत्थर से बनाई गई होंगी, और लकड़ी उस विस्तार को फैलाने के लिए बीम रही होगी। धातुकर्म भी.

हमारे पास विभिन्न तकनीकें हैं जिनका उपयोग किया गया था और इनमें से कुछ धातुकर्म प्रतिष्ठानों के पुरातात्विक साक्ष्य हैं जिन्हें अभी भी पुरातात्विक रूप से पता लगाया जा सकता है,

और इसमें छोटी-छोटी प्रिल्स, धातु के छोटे टुकड़े शामिल हैं जिन्हें कभी-कभी गलाने के रूप में निकाला जा सकता है जहां अयस्क निकाला जाता है। अन्य समय में, हमारे पास पिघलने वाले प्रतिष्ठान होते हैं जहां मौजूदा धातु की वस्तुओं को पिघलाने और पुनः उपयोग करने के लिए एक कूसिबल में रखा जाता है। पुरातात्विक रूप से धातु के औजार ढूँढ़ने पर, हम उन्हें उतनी बार नहीं पाते जितना कोई सोच सकता है क्योंकि इन्हें अंतहीन रूप से पुनर्नवीनीकरण और पुनः उपयोग किया गया था।

कोई भी व्यक्ति धातु के औजार को फेंकता नहीं है, बल्कि उसे पुनः उपयोग के लिए पिघला देता है। प्राचीन इज़राइली संस्कृति का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू धर्म है। हमें बाइबल में वर्णित प्रथाओं में इज़राइली धर्म की एक तस्वीर मिलती है, और फिर हम पुरातात्विक रिकॉर्ड की ओर मुड़ते हैं, और जो हम पाते हैं उसके साथ हमें कई प्रतिध्वनियाँ मिलती हैं।

अब, हमें बहुत सारे सबूत मिलते हैं कि वे अकेले यहोवा की पूजा नहीं कर रहे थे, और कुछ लोग इसे प्राचीन इज़राइल के किसी प्रकार के बहुदेववादी प्रतिनिधित्व के सबूत के रूप में इंगित करेंगे। लेकिन बाइबिल के पाठ को दोबारा पढ़ते समय किसी को यह याद रखने की जरूरत है कि याहवे के प्रति किसी भी प्रकार की निष्ठा, याहवे की तो बात ही छोड़ दें, निश्चित रूप से अल्पसंख्यक राय के रूप में पेश की जाती है। इसलिए, यदि कोई राजाओं या पैगंबरों की किताबें पढ़ता है, तो हमें पता चलता है कि लोग वास्तव में, कई देवताओं की पूजा करते थे और उन्हें यहोवा की पूजा के साथ जोड़ते थे, जो वास्तव में, हम अक्सर पाते हैं पुरातात्विक रिकॉर्ड में।

इसलिए, मैं इसे असंगति के रूप में नहीं, बल्कि ठीक उसी स्थिति के साथ प्रतिध्वनि के रूप में देखता हूँ जिसका वर्णन बाइबल कर रही है। जैसा कि मैंने बताया, बाइबिल के परिप्रेक्ष्य में हमारी कुछ जटिलताएँ हैं। लेकिन हमारे पास पुरातात्विक सामग्री भी है जो हमें यह समझने में मदद कर सकती है कि इज़राइली धर्म का अभ्यास कैसे किया जाता था।

अभ्यास से विश्वास की ओर जाना, निश्चित रूप से, अधिक जटिल है, लेकिन ये उपकरण जो हमारे पास हैं, भौतिक अवशेष और प्रतीकात्मक अवशेष और यहां तक कि परमाणु अवशेष, नाम, हमें इन राज्यों में एक नृवंशविज्ञान समानांतर के रूप में तस्वीर का थोड़ा सा पुनर्निर्माण करने में मदद कर सकते हैं।, फिर से, जहां हम सादृश्य द्वारा प्राचीन लोगों और पारंपरिक समाजों में रहने वाले हाल के लोगों के बीच तुलना कर सकते हैं। जब हम पंथ स्थानों के बारे में सोचते हैं, और मुझे स्पष्ट करना चाहिए कि पंथ से मेरा क्या मतलब है, कभी-कभी जब मैं पंथ कहता हूँ, तो लोग संप्रदायवादी सोच रहे होते हैं जो यूएफओ या उसके जैसा कुछ आने का इंतजार कर रहे हैं। मैं यहां विशुद्ध रूप से धर्म के अभ्यास के रूप में पंथ, धर्म के अभ्यास के रूप में पंथ के रूप में बात कर रहा हूँ।

इसलिए, यदि हम पंथ प्रतिष्ठानों को देख रहे हैं, तो हम उन स्थानों को देख रहे हैं जहां प्राचीन इज़राइल में धर्म का अभ्यास किया जाता था। इसकी पहचान में, मानवविज्ञानी कई मानदंड लेकर आए हैं जिन्हें लागू करने से हमें उन जगहों को अलग करने में मदद मिल सकती है जहां हमारे पूजा स्थल हैं। उनमें से कुछ बिल्कुल स्पष्ट हैं, किसी विशेष देवता के प्रतीक या चित्र या शिलालेख।

अन्य, हम भौतिक संस्कृति में बार-बार पैटर्न देखना शुरू करते हैं जो किसी प्रकार की अनुष्ठान गतिविधि, एक निश्चित प्रकार की कलाकृतियाँ जो एक ही स्थान पर बड़ी मात्रा में दिखाई देती हैं, एक निश्चित स्थान पर दफन की गई मूर्तियाँ, या जानवरों की हड्डियों की सांद्रता का सुझाव दे सकते हैं। धूपबत्ती या चित्र आदि जलाने के लिए अन्य बर्तनों के साथ गड्ढा। इसलिए, हम सामान्य रूप से प्राचीन दुनिया में और यहां विशेष रूप से प्राचीन इज़राइल में विभिन्न पंथ स्थानों और विभिन्न पूजा केंद्रों को स्थापित करने के लिए डेटा के एक समूह का उपयोग करते हैं। वे बहुत छोटे तथाकथित पंथ कोनों से लेकर होते हैं, जहां हमें छोटे कमरे मिलते हैं, आमतौर पर बेंचों के साथ, और हमारे पास धूप जलाने वाले या चित्रित स्टैंड, कभी-कभी छवियां और विशेष रूप से असामान्य बर्तन होते हैं।

कभी-कभी, वे जानवरों के आकार में जूमार्फिक होंगे, और कभी-कभी, हमें मूर्तियाँ भी मिलेंगी। और इसलिए, हमारे पास ये छोटे प्रतिष्ठान, तथाकथित पंथ कोने हैं, और फिर हमारे पास, बहुत कम उदाहरणों में, हमारे पास बड़े मंदिर, बड़े मंदिर भी हैं। हमारे पास अराद, डैन में एक मंदिर है, और मोट्ज़ा में एक मंदिर की नई खोज है।

इस बात के प्रमाण हैं कि बीयर शेवा में एक बड़ी वेदी थी। और फिर लौह युग 1 के कुछ पुराने स्थल भी हैं जो प्राचीन इज़राइल की पूजा से जुड़े हुए हैं। एक बहस माउंट एबल पर है, जो मेरी राय में, एक तीर्थस्थल प्रतीत होता है, लेकिन पाठ-महत्वपूर्ण आधार पर बाइबिल परंपरा में कुछ जटिलताएं हैं, अगर हम तलाश कर रहे हैं तो शायद हमें गेरिज़िम पर ध्यान देना चाहिए वेदी जिसका वर्णन बाइबिल ग्रंथों में किया गया है।

इसलिए, एबाल के साथ यह बताना कठिन है, लेकिन मुझे लगता है कि इस बात के अच्छे सबूत हैं कि यह वास्तव में एक तीर्थस्थल है। उसे किससे जोड़ा जाए, उसकी रचना क्या है, इस पर विवाद बना हुआ है। बैल स्थल एक और रोमांचक खोज है जो निश्चित रूप से सांस्कृतिक श्रद्धा का प्रमाण दिखाती है, और एक छोटा सा बैल जो वहां पाया गया था, कई लोग उस पूजा से जुड़े हैं जिसका वर्णन बाइबिल में किया गया है जो गोजातीय कल्पना से जुड़ा है।

तो, हम जानते हैं कि कनानी धर्मों और उस समय के कई अन्य धर्मों में बैल एक सामान्य प्रतीक था, और हम देखते हैं कि यह निर्गमन 32 और 1 राजा 12 की कहानी के भीतर प्रतिच्छेदित है, और विशेष रूप से उन संदर्भों में उत्तरी धर्म से जुड़ा हुआ है। . टेल डैन में, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, यहां से एक तस्वीर है जहां पार्क अथॉरिटी ने धातु के ढांचे का पुनर्निर्माण किया है, जो कि भूमि में कहीं भी खोजी गई इस चार-सींग शैली की सबसे बड़ी वेदी होगी। आप देख सकते हैं कि ये सींग हैं, लेकिन तथ्य यह है कि हमें द्वितीयक उपयोग में उपयोग किए जाने वाले सींगों में से केवल एक ही मिला है, और इसलिए हम वेदी के आधार के आधार पर उस आकार को फिर से बना रहे हैं।

लेकिन उस स्थल पर कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक विशेषताएं हैं जो बताती हैं कि, वास्तव में, कम से कम मेरी व्याख्या में, इस अभयारण्य में यहोवा की पूजा चल रही है। तो, हमारे पास जानवरों की हड्डियों के अवशेषों का एक पत्राचार है जो बलिदान के नुस्खे के साथ बहुत अच्छी तरह से

फिट बैठता है जैसा कि हमारे पास बाइबिल की पुरोहित सामग्री में है। इसमें से कुछ मेरे कुछ शोध प्रबंध अनुसंधान का विषय था, जिसमें उल्लेख किया गया था कि आंगन में बाएं तरफ के हिस्सों के विपरीत पुजारियों से जुड़े स्थान के साथ दाएं तरफ के हिस्सों के बीच एक उच्च पत्राचार था।

और फिर हमें पुरोहिती नुस्खों से याद आता है कि पुजारियों को दाहिना कंधा या दाहिनी जांघ दी जाती थी, यह इस बात पर निर्भर करता था कि कौन सा पाठ, और क्या हम ग्रीक या हिब्रू पढ़ रहे हैं, एक दिलचस्प संबंध। और जानवरों की हड्डियों के साथ तीन या चार अन्य संबंध थे। जैसा कि आप आने वाली स्लाइड में देखेंगे, कुछ रोमांचक कलाकृतियाँ भी हैं जो याहवे की पूजा के बाइबिल विवरणों से जुड़ती हैं।

और वास्तव में, वहाँ एक मुहर मिली थी जिस पर एक नाम था, एक थियोफोरिक नाम, जिसमें दिव्य नाम यहोवा का तत्व शामिल है। इसलिए, जैसा कि हम इन टुकड़ों को एक साथ रख सकते हैं, यहां बहुत सारे सबूत हैं कि तेल दान में जिस भगवान की पूजा की जा रही थी वह वास्तव में यहोवा था, निश्चित रूप से 8वीं शताब्दी में और संभवतः 9वीं शताब्दी में, और मैं इसे पीछे भी धकेलूंगा वह परिवर्तन, हालाँकि इस पुरातत्व के अधिकांश भाग का अभी भी मूल्यांकन किया जा रहा है। वास्तुकला में कुछ पुनर्विन्यास हो सकते हैं।

इसलिए, हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा। लेकिन तेल मोट्टा का यह मंदिर जेरूसलम से ज्यादा दूर नहीं है, जो ईसा पूर्व 9वीं और 8वीं शताब्दी का बताया गया है, यह भी काफी उत्साह और सवाल पैदा कर रहा है कि जेरूसलम के इतना करीब होने के बावजूद, यह जेरूसलम मंदिर से कैसे संबंधित है। ? जेरूसलम मंदिर के बारे में बात करते हुए, या हम कह सकते हैं कि मंदिर, जिसके बारे में हम सोचते हैं जब हम बाइबिल के पाठ के बारे में बात कर रहे होते हैं, तो हमें यह समझने की कोशिश में कई जटिलताएं होती हैं कि यह कैसा दिखता था, यह कैसे काम करता था, और सबसे बड़ी जटिलता यह है कि हमारे पास कोई भी सामग्री शेष नहीं है। यह तर्क दिया गया था कि वहाँ एक अनार था, लेकिन तब से इस पर सवाल उठाया जा रहा है, और हो सकता है कि एक पुनर्निर्मित कलाकृति और जालसाजी एक साथ मिल गई हो।

लेकिन हमारे पास पहले मंदिर, सुलैमान के तथाकथित पहले मंदिर, के लिए बहुत कम सबूत हैं, यदि कोई हो। और बाइबिल के वर्णन, याद रखें, ये इतिहास में विभिन्न स्थानों पर मंदिर का वर्णन कर रहे हैं। वे विशेष समय पर हुए जीर्णोद्धार का भी उल्लेख करते हैं।

तो, बाइबिल की परंपराएँ मंदिर कैसा दिखता था इसकी एक समग्र तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। फिर भी, हमारे पास कुछ अद्भुत तुलनाएँ हैं, कुछ अद्भुत पुरातात्विक तुलनात्मक सामग्री है जो हमें वर्णित चीजों के प्रकारों के बारे में बहुत सारी जानकारी दे सकती है, इनसेट खिड़कियों से लेकर चल कोल्ट स्टैंड से लेकर करूबों की प्रतिमा तक। वे पुनर्जागरण काल के गोल-मटोल बच्चे नहीं थे, बल्कि मानव चेहरे, शेर के शरीर और पंखों वाले क्रूर संरक्षक जानवर थे।

ये संरक्षक जानवर हैं जिन्हें हमने अंदारा में मंदिर के बगल में रखा है, जो पार्श्व कक्षों, एक बरामदे, एक हॉल और परम पवित्र स्थान के साथ सुलैमान के मंदिर के वर्णन के साथ कई समानताएँ

प्रदर्शित करता है। तो, हमारे पास प्रतीकात्मक रूपांकनों, वास्तुशिल्प विशेषताओं, एक पोर्च से मुख्य हॉल से पवित्र स्थान तक प्रगति की इस तथाकथित त्रिपक्षीय संरचना के कई उदाहरण हैं। इनमें से कुछ हमारे पास टेल डैन में भी हैं।

सजावट जिन्हें हम प्राचीन निकट पूर्वी आइकनोग्राफी से जानते हैं, रोसेट से लेकर करूब से लेकर पामेट्स, धँसी हुई खिड़कियां और अनार, आदि। हमारे पास विभिन्न कोल्ट स्टैंड भी हैं जिनका उपयोग धूप के लिए या शायद कटोरे के लिए किया जाता था जिसमें परिवाद डाला जाता था या धूप जलाया जाता था, और यहां तक कि वेदी किट भी। तो मैं टेल डैन से यह उदाहरण दूंगा जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था जो पश्चिमी चैंबर्स में पाया गया था।

तो, यह एक विहंगम दृश्य है। और यहां पश्चिमी चैंबर्स में एक छोटे से कमरे में एक मीटर की एक छोटी वेदी के बगल में, हमें कुछ बहुत ही दिलचस्प उपकरण मिलते हैं। एक है ये खूबसूरत कांसे का कटोरा।

दूसरा फावड़े की एक जोड़ी है। एक जैसे दिखने वाले ये दोनों फावड़े एक के ऊपर एक रखे हुए पाए गए। तीसरे प्रकार का लंबे हैंडल वाला फावड़ा।

और हमारे पास एक धँसा हुआ बर्तन भी था जो जले हुए जानवरों के अवशेषों से भरा हुआ था। कलाकृतियों की इस सघनता के बारे में आश्चर्यजनक बात यह है कि जब हम बाइबिल के ग्रंथों में देखते हैं कि तम्बू या मंदिर की वेदी किट किससे बनती है, तो इसमें बहुत विशिष्ट तत्व होते हैं। इसमें एक रक्त कटोरा है, एक जोड़ी है, हमेशा एक जोड़ी होती है, राख निकालने वाले फावड़े, एक धूप फावड़ा, एक राख बर्तन, और कुछ सूचियों में इसमें एक कांटा होता है।

इसलिए, पहले के कुछ शोधों में, मैंने इस कटोरे को बाइबिल के रक्त कटोरे के अलावा किसी और के साथ जोड़ा था, जो वेदी के खिलाफ छिड़कने के लिए बलि के जानवर के खून को पकड़ लेता था। फावड़ियों की यह जोड़ी, जैसा कि फावड़ियों की जोड़ी का वर्णन किया गया है, बाइबिल पाठ में हमेशा कटोरे के साथ-साथ रहती है। अगरबत्ती के फावड़े, रोमन और बीजान्टिन काल तक चले इनके बाद के चित्रणों से हम जानते हैं कि इनमें अक्सर धूप जलाने के लिए बहुत बड़ी सतह होती है।

और राख का बर्तन, जैसा कि मैंने बताया, बाइबिल पाठ में हमारे पास पहले से ही एक था। वे पोर्टेबल, प्रतीत होते हैं, और धातु से बने होते हैं। यह सिरेमिक है।

मैं अपने एक मित्र से बात कर रहा था कि एकमात्र चीज़ जो मुझे नहीं मिली वह थी एक कांटा। वह कुछ ऐसी ही सामग्री पर काम कर रहे थे। बोस्टन कॉलेज में अब उसका नाम एंड्रयू डेविस है।

और उन्होंने कहा, क्या आपने वापस जाकर रिकॉर्ड की जांच की? इस कमरे की दहलीज पर एक लंबा धातु का हैंडल पाया गया। तो, हो सकता है कि हमारे पास कांटा भी हो, क्योंकि आप तीन-तरफा कांटा क्या कहते हैं जिसके दो कांटे टूटे हुए हों? आप इसे एक लंबा धातु का हैंडल कहते हैं। तो शायद हमारे पास वे सभी हैं।

वास्तव में, बाइबिल पाठ की सभी सूचियों में कांटा नहीं है। तो, ये और अन्य बाइबिल और पुरातत्व से कुछ के साथ एक मजबूत संबंध का सुझाव देते हैं। एक और उदाहरण यह है कि हम पूरे प्राचीन इज़राइल और यहूदा में तथाकथित जेपीएफ, यहूदी या यहूदी स्तंभ की मूर्तियाँ पाते हैं, जो एक महिला को चित्रित करती हैं और कभी-कभी छोटी देवी छवियों के रूप में अशेरा की पूजा से जुड़ी होती हैं।

दूसरों ने कहा है नहीं, नहीं, नहीं। अशेरा कांस्य युग के दिवंगत देवता हैं। हम इसमें विशेष विवरण पढ़ रहे हैं।

क्या इस समयावधि में अशेरा भी एक देवता है? या क्या ऐसे तत्व हैं जो अशेरा की वास्तविक छवियों के बिना उसकी पूजा की याद दिलाते हैं? अन्य लोग कहेंगे कि ये गर्भावस्था और स्तनपान की प्रक्रिया में महिलाओं की सहायता के लिए मिट्टी में प्रार्थना या किसी प्रकार का आकर्षण है। तो, फैसला अभी बाकी है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इनमें से कुछ सबसे वफादार राजाओं, बाइबिल के दृष्टिकोण से, हिजकिय्याह और योशिय्याह के समय के दौरान यरूशलेम में ही इनकी उच्च सांद्रता पाई गई है।

लेकिन आपको इस तरह की खोजों से प्राचीन इज़राइली पूजा की कुछ भौतिक संस्कृति का अंदाज़ा मिलता है। साक्ष्य का एक और टुकड़ा जो हम ला सकते हैं वह परमाणु साक्ष्य है, जो कि इस बाइबिल समय अवधि के नाम हैं। तो, हमारे पास बाइबिल में नाम हैं, और फिर हमारे पास ऐसे नाम भी हैं जिन्हें पुरातात्विक रूप से पहचाना जा सकता है।

तो, यहाँ हिजकिय्याह सील है, और ये सामरिया ओस्ट्राका की तस्वीरें हैं, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े जिनका उपयोग शायद अनिवार्य रूप से नोट पेपर, रसीदें, 9वीं या शायद 8वीं शताब्दी के जैतून के तेल के ट्रेकिंग शिपमेंट के रूप में किया जाता था। लेकिन इन नामों को देखकर, धर्म के प्रश्न के संदर्भ में जो खास बात है वह यह है कि इनमें से कई नाम थियोफोरिक नाम हैं। यानी कि उनके नाम में किसी देवता के नाम का तत्व शामिल होता है।

तो, मेरा नाम जोनाथन, यो-नातन है। यो यहोवा के संक्षिप्त रूप के रूप में, नातान ने दिया है, इसलिए यहोवा ने दिया है। मेरा नाम थियोफोरिक नाम है।

हमारे पास थियोफोरिक नाम हैं, और आपने उन्हें सुना है। याह, यहोवा का संक्षिप्त रूप है। यिर्मयाह, हिजकिय्याह और जकर्याह थियोफोरिक नाम हैं।

लेकिन हमारे पास अन्य देवताओं के साथ थियोफोरिक नाम भी हैं, बाल के साथ, हदद के साथ, वगैरह। इसलिए, कुछ परमाणु साक्ष्यों को ट्रेक करके, हम उन देवताओं का सुझाव दे सकते हैं जिनकी विशिष्ट संदर्भों में पूजा की जाती थी। कुछ लोग भौगोलिक और कालानुक्रमिक वितरण के बारे में अनुमान लगा सकते हैं, उन संदर्भों में पूजे जाने वाले देवताओं के साथ कुछ पत्राचार के रूप में नामों की लोकप्रियता पर नज़र रख सकते हैं।

अब, यह हमेशा काम नहीं करता। मेरे पास एक बार मुहम्मद नाम का एक ईसाई छात्र था। उनके माता-पिता, एक ईसाई थे और एक मुस्लिम थे।

इसलिए, यह हमेशा लोगों के धर्म के अनुरूप नहीं होता है। लेकिन प्राचीन संदर्भों में, विशेष रूप से जहां देवता विशेष जातीय समूहों से बंधे थे और कई आधुनिक संदर्भों के बजाय एक स्थान से बंधे थे, जहां कोई व्यक्ति धर्म चुन सकता था या धार्मिक परिवर्तन कर सकता था, वे पूजा की प्रासंगिकता की बड़ी तस्वीर के बारे में कुछ कहते हैं। अब, आपके पास धर्मग्रंथों में ऐसे उदाहरण हैं जहां नाम बदले गए हैं, इत्यादि।

लेकिन यह उन देवताओं के संबंध में सुझावात्मक और सहायक हो सकता है जिनकी विशेष समय पर पूजा की जाती थी। कई मायनों में सबसे अधिक मददगार विशेष शिलालेख हैं, विशेषकर लंबे शिलालेख। अब, हमारे पास बहुत अधिक नहीं हैं, लेकिन दो हैं जिन्होंने काफी उत्साह पैदा किया है, खिरबेट अल-कोम और किंटिलाट अल-जरुद में याहवे और उनके अशेरा का उल्लेख है।

और कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि किंटिलाट अल-जारुद पिथोस पर चित्रित प्रतिमा को याहवे और उनके अशेराह का चित्रण माना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिमा विज्ञान और शिलालेख अलग-अलग समय पर बनाए गए थे, लेकिन शायद यह अंतराल कोई और भर रहा था? इन बातों पर खूब बहस होती है। और उसके अशेरा का क्या अर्थ है? चूंकि हम आम तौर पर किसी व्यक्ति के नाम पर सार्वनामिक प्रत्यय नहीं लगाते हैं, किसी देवता का नाम भी कम नहीं होता है।

तो क्या उसका अशेराह, क्या अशेराह एक उपकरण, एक पवित्र वृक्ष, या किसी महिला देवता की याद दिलाने वाली किसी प्रकार की छवि है, लेकिन वास्तव में यहोवा की पूजा के लिए उपयुक्त है? मैंने कुछ ईसाइयों के बारे में सुना है जिनके पास दिसंबर में क्रिसमस के पेड़ भी होते हैं, जहां पहले एक बुतपरस्त प्रतीक का पुनर्विनियोजन होता है जिसे बाद में एक विशेष धार्मिक छतरी के नीचे मोड़ दिया जाता है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह शायद उससे कहीं अधिक जटिल है जितना हम कभी-कभी महसूस करते हैं, प्रतीक और अर्थ के बीच, पूजा, उपस्थिति और पूजा के बीच यह पत्राचार। इसलिए, जब हम इन प्राचीन कलाकृतियों को देखते हैं तो हमें उन्हीं उपकरणों को लागू करने की आवश्यकता होती है।

लेकिन फिर हम बाइबिल के पाठों को भी देखते हैं जिनमें उल्लेख होता है, और दिलचस्प बात यह है कि, लगभग हमेशा बहुवचन में, बाल और अशेरा, दोनों का बहुवचन में उल्लेख होता है। तो निश्चित रूप से वहाँ थे, और इन देवताओं की, उनके आस-पास के लोगों की, लौह युग में यहोवा की पूजा में बहुत अधिक पूजा और समावेश था। हमारे पास प्रतिमा विज्ञान के अद्भुत उदाहरण भी हैं जो हमें प्राचीन इज़राइल के धर्म को समझने में मदद कर सकते हैं।

मैं यहां दो उदाहरण दूंगा। यह अहिराम ताबूत की एक छवि है जिसे कुछ लोग बाइब्लोस में खोजे गए बाइबिल के हीराम से जोड़ेंगे। और इसमें मृत राजा को, जो झुके हुए कमल से दर्शाया गया है, भेंट की मेज के सामने एक कटोरा ले जाते हुए दिखाया गया है।

लेकिन मैं यहां जो कहना चाहता हूं, वह यह है कि उसने अपना पैर चौकी पर रखा है और उसका सिंहासन पार्श्व करूबों, पार्श्व करूबों द्वारा बनाया गया है। तो, हमने इसके बारे में कहाँ सुना है? खैर, परमपवित्र स्थान में सुलैमान के मंदिर के वर्णन में, हमारे पास दो करूब हैं जो सन्दूक की देखरेख करते हैं। कुछ लोग सुझाव देंगे, मेरा मानना है कि यह सही है, यह किसी प्रकार के सिंहासन का रूप या कार्य है।

सन्दूक को ही चरण चौकी कहा जाता है। तो, वहां हम जो सीखते हैं, वह स्पष्टता के समुद्र में है जिसे इस प्रतीकात्मकता से स्पष्ट किया जा सकता है, वह यह है कि पवित्र स्थान में हमारे पास क्या है? हमें फर्नीचर मिल गया है। यह एक ऐसा बयान दे रहा है जो अजीब है।

देवता की कोई छवि नहीं है। वहां एक फर्नीचर है जिस पर अदृश्य देवता रहते हैं, जो करूबों के ऊपर विराजमान हैं। एक और दिलचस्प उदाहरण जेजेरेल घाटी के किनारे पर 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व में तनख में तनख पंथ का स्टैंड है, इस पर कोई शिलालेख नहीं दिखता है लेकिन निश्चित रूप से धार्मिक प्रतीकात्मकता को दर्शाया गया है जहां आपके पास एक बछड़ा है, कुछ लोग घोड़ा कहेंगे, लेकिन मैं इसे समझता हूं कई अन्य लोगों के साथ एक बछड़ा, एक सूर्य डिस्क के साथ जो पंखों वाला है और किनारे पर घुंघराले हैं जो संभवतः स्तंभों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फिर एक पेड़ जिसके किनारे जंगली बकरियां और शेर हैं। यहाँ ऊपर, हमारे किनारे पर करूब हैं। अगले एक नीचे, हमारे पास दो करूबों के साथ एक खाली जगह है।

और फिर नीचे के रजिस्टर पर हमारे पास दो शेरों के साथ एक महिला की आकृति है। इसलिए, कई विद्वानों ने यहां सुझाव दिया है कि हमारे पास यहोवा और कुछ महिला देवता, अशेराह का चित्रण है, या शायद किसी विशेष अशेराह की बाद की अभिव्यक्ति है। और इसलिए, आपके पास सूर्य के प्रतीक में यहोवा को अमूर्त और प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया गया है।

और दिलचस्प बात यह है कि बाइबिल में वर्णित एक वफादार राजा हिजकिय्याह के साथ, उसने अपनी प्रतिमा में एक छवि के रूप में सूर्य डिस्क का भी उपयोग किया। तो, हमारे पास बाइबिल के पाठ भी हैं, जो यहोवा को सूर्य डिस्क से जोड़ते हैं। तो, यहाँ यहोवा एक बछड़े के ऊपर विराजमान है, जिसके बारे में हमने उत्तरी साम्राज्य में सुना है।

देवता के वाहन या आसन के रूप में बछड़ा। करूब जो यहोवा से जुड़े हुए हैं। और फिर अगला रजिस्टर नीचे, एक पवित्र वृक्ष, बकरियाँ, और शेर।

ये सभी प्राचीन निकट पूर्व में सामान्यतः महिला देवताओं से जुड़े हुए हैं। तो, कुछ ने यहोवा और अशेरा का सुझाव दिया है। और फिर करूबों के साथ एक खाली जगह, यहोवा, फिर से शेरों के साथ एक महिला आकृति के साथ।

तो, करूब, करूब, सिंह, सिंह। इसलिए, मैं यहोवा और अशेरा, यहोवा और अशेरा का सुझाव दूंगा। इन छवियों की विशिष्ट पहचान की परवाह किए बिना हमारे पास निश्चित रूप से धार्मिक परंपराओं के मिश्रण का एक उदाहरण है।

अंतिम उदाहरण जो हमारे पास है, फिर से यहां सतह को खंगालने से, जो हमें प्राचीन इज़राइली धर्म और संस्कृति को अधिक व्यापक रूप से समझने में मदद कर सकता है, वह है प्राचीन निकट पूर्वी पुरातत्व और प्राचीन इज़राइल के बाहर के ग्रंथों को देखना। तो, हमारे पास अन्य मंदिर, अन्य सांस्कृतिक सामग्रियां, और व्यापक ग्रंथ और साथ ही नृवंशविज्ञान समानताएं हैं। हम इस तथ्य में समानताएं देख सकते हैं कि वे बलिदानों का अभ्यास कर रहे हैं, वे पवित्र भोज में संलग्न हैं, कई अनुष्ठान जो बाइबिल के अनुष्ठानों, भजनों, मंदिरों, पुरोहिती, औजारों और कई समानताओं के समानांतर हैं।

लेकिन मतभेद भी, अनेक मतभेद भी। निःसंदेह, मुख्य अंतर पूजा की वस्तु की केंद्रीयता है, वह यहोवा है, जो प्राचीन इज़राइल का व्यक्तिगत ईश्वर है। लेकिन यह भी, पूर्ण चक्र में आना और यहीं पर समाप्त होना, राजशाही के पदानुक्रम के संबंध में धर्म के कार्य करने के तरीके में एक दिलचस्प अंतर भी है।

तो, इन सभी अन्य संदर्भों में, बहुत कम अपवादों को छोड़कर, महायाजक अक्सर राजा होता है या वे मिलकर मिलकर काम कर रहे होते हैं। राजा की इस छवि के बारे में राजनीतिक और धार्मिक रूप से एक ऊंचा दृष्टिकोण है। यह प्राचीन इज़राइली धर्म और प्राचीन इज़राइली संस्कृति में बहुत अलग बात है क्योंकि इज़राइल के राजा को सही ढंग से समझा जाता है कि वह कोई और नहीं बल्कि स्वयं यहोवा है।

इसलिए, हमने प्राचीन इज़राइल की इस कहानी के माध्यम से देखा है कि हम वापस वहीं आ गए हैं जहाँ से हमने उत्पत्ति 1 में शुरुआत की थी। मानवता के साथ उनके संबंधों में ईश्वर की भूमिका के डिज़ाइन के बीच एक तनाव, एक विरोधाभास है जो पूरे इतिहास में घटता-बढ़ता रहता है। प्राचीन इज़राइल के लोग इस डिज़ाइन के खिलाफ़ हैं। लेकिन यहोवा की पूजा की अभिव्यक्ति के रूप में वह धर्म केवल यहोवा और यहोवा के लिए है, किसी राजनीतिक व्यक्ति या राष्ट्रीय विचारधारा के लिए नहीं। तो, मुझे लगता है, यह कुछ ऐसा है, जिसके बारे में हममें से उन लोगों को, विशेष रूप से इन दिनों, आस्था के संदर्भ में सोचना चाहिए।

क्योंकि भले ही ये चीजें बहुत पुरानी हैं और हमें इन्हें धूल की परतों से खोदकर निकालना होगा, फिर भी ये नए तरीकों से प्रासंगिक और रोमांचक बनी हुई हैं।

यह डॉ. जोनाथन ग्रीर और पुराने नियम में पुरातत्व पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 5 है, सांस्कृतिक संदर्भ।